पाठ-9

साहस

– गणेश शंकर विद्यार्थी

आइए सीखें

■ साहसिक कार्यों का महत्व ■ साहसी व्यक्ति के गुण ■ मुहावरों का प्रयोग ■ संधि की परिभाषा और उसके भेद।

संसार के काम–बड़े अथवा छोटे–साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी थे। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु इत्यादि आज हमारे हृदयों में जीवित हैं। आल्पस पर्वत के विशाल शिखरों को पार करने वाले हनीवल और नेपोलियन का नाम वीरवरों के नामों के साथ केवल उनके अतुलनीय साहस के कारण ही लिया जाता है। यह साहस का ही प्रभाव था जिसने तैमूर, बाबर, शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीत सिंह और संग्राम सिंह जैसे सामान्य व्यक्तियों को महान बना दिया।

सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं। बादशाह मुहम्मद आदिल पर, भरे दरबार में कितने ही सिरों और धड़ों को धरणी पर गिरा कर, एक युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था। कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर जब्त कर ली थी। इसी से उक्त युवक ने इतने साहस का काम किया। युवक मारा गया। उसके साहस और निर्भीकता का कुछ ठिकाना नहीं है परन्तु क्रोधान्ध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी–कभी कर गुजरते हैं। ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है।

मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है। यह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली–भाँति प्रकट करता है। इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परन्तु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है। अकबर बादशाह के पास दो राजपूत नौकरी के लिए

शिक्षण संकेत

▸ छात्रों को साहसिक घटनाएँ या महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग सुनाए ▸ छात्रों से उनके साहसिक कारनामों के बारे में जानें ▸ उदाहरणों द्वारा संधि समझाएँ।

आए। अकबर ने उनसे पूछा कि तुम क्या काम करते हो? वे बोले, 'जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर?' बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी। राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक-दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मर कर ठंडे हो गए। इस प्रकार का साहस नि:संदेह प्रशंसनीय है, परन्तु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं। धन मान इत्यादि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं—हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है 'कर्त्तव्यपरायणता'। कर्त्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। इस विचार से शून्य होने पर कोई भी मनुष्य, फिर चाहे उसके और विचार कैसे ही उन्नत क्यों न हों, मानव जाति की कोई भी भलाई नहीं कर सकता। अपने कर्त्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकारपरायण या समाज-हित-चिन्तक नहीं कहा जा सकता। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार-ही-नहीं बल्कि अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा तक का—उपकार नहीं कर सकता। कर्त्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

उच्चकोटि के साहस के लिए कर्त्तव्यपरायण बनना परमावश्यक है। कर्त्तव्य परायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्त्तव्य किया। मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया। थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा। स्वदेश-भक्ति ने उसे बतला दिया, 'यह समय ऐसा नहीं है कि तू अपने घरेलू झगड़ों को याद करे। उठ, और अपना कर्त्तव्य पालन कर।'

इस विचार ने उसे इतना मतवाला कर दिया कि वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर समय पर अपने देश और राजा की सेवा के लिए पहुँच गया।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए, परन्तु आज तक कर्त्तव्यपरायण वीर बुद्धन की वीरता को लोग सम्मानपूर्वक याद करते हैं। मौरूदा में आज भी एक स्तम्भ उन वीरों की यादगार में खड़ा हुआ, इतिहास-वेत्ताओं के हृदय को उत्साहित करता है।

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं, परन्तु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले-यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा

लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा में ऐसे मदान्ध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के ही लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह हमारे संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेश मात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में आया करता है। देश, काल और कर्त्तव्य का विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्त्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

शब्दार्थ

अतुलनीय=जिसकी तुलना न की जा सके। **धरणी**=पृथ्वी। **निर्भीकता**=बिना डर के। **अभीष्ट**=वांछित, चाहा हुआ। **स्वार्थहीनता**=स्वयं के लाभ के बिना, निस्वार्थ। **दृढ़ता**=कठोरता। **रणक्षेत्र**=युद्ध भूमि। **आत्मोत्सर्ग**=स्वयं का बलिदान करना। **इतिहासवेत्ताओं**=इतिहास के पूर्ण ज्ञाता, जानकार। **मदान्ध**=मद से अन्धा। **अनभिज्ञ**=अनजान। **सर्वोच्च**=सबसे ऊँचा।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- अतुलनीय – परायण
- विशाल – साहस
- स्वदेश – शिखर
- कर्त्तव्य – भक्ति

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- साहसी के हृदय में ..... अत्यन्त आवश्यक है। (पवित्रता/मलिनता)
- मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: ..... में पाया जाता है। (शूरवीरों/कायरों)
- सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए ..... की बलिष्ठता आवश्यक नहीं है। (सिर-पैर/हाथ-पैर)
- उच्चकोटि के साहस के लिए .....बनना परमावश्यक है। (स्वार्थ परायण/कर्त्तव्य परायण)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) किसी देश का इतिहास बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका किसकी होती है?

(ख) युवक के साहस को प्रशंसा योग्य क्यों नहीं माना गया?

(ग) कर्त्तव्य ज्ञान शून्य मनुष्य को लेखक ने किसके समान कहा है?

(घ) मौरूदा गाँव में किसकी स्मृति में स्तम्भ बनाया गया?

(ङ) मध्यम श्रेणी के साहस को 'निस्तेज-सा' क्यों कहा गया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) साहस किसे कहते हैं? लेखक के अनुसार इसकी कितनी श्रेणियाँ है?

(ख) मातृभूमि को संकट में देखकर बुद्धन ने क्या किया?

(ग) सर्वोच्च श्रेणी के साहस की विशेषताएँ लिखिए।

(घ) साहसी व्यक्ति अपने किन गुणों द्वारा पहचाना जाता है?

(ङ) 'साहस' पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

भीष्म, निर्भीक, चरित्र, निस्तेज

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

अभीमन्यु, अतीरिक्त, शक्ती, प्रतयेक

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

रक्त उबल पड़ना, जान पर खेलना

7. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए—

कपड़ा, किरण, झरना, आँख, माला, रोटी

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए—

नरेन्द्र निष्कपट भाव से माता-पिता की सेवा करता और यथाशक्ति उनके मनोरथ को पूर्ण करने का प्रयत्न करता था। वह समय पर विद्यालय पहुँच जाता था। वह सच्चरित्र था और निर्धन छात्रों की सेवा करता था। वह सर्वोत्तम छात्रों में गिना जाता था।

रेखांकित शब्दों को तालिका में समझिए—

शब्द	पहले शब्द का अंतिम वर्ण	दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण	विकार परिवर्तन	संधि
नर+इन्द्र	अ	इ	ए	नरेन्द्र
नि:+कपट	:	क	ष् क	निष्कपट
सत्+चरित्र	त्	च	च्च	सच्चरित्र

उपर्युक्त तालिका में दिए गए शब्दों से स्पष्ट है कि नरेन्द्र शब्द में अ, इ स्वरों से 'ए' का विकार हुआ है। इसमें स्वरों की संधि हुई है।

सच्चरित्र में त् व च व्यंजन के मेल से च्च विकार हुआ है। यहाँ व्यंजनों की संधि हुई है। निष्कपट शब्द में विसर्ग का ष्, विकार हुआ है। इस शब्द में विसर्ग के साथ व्यंजन के मेल से विसर्ग संधि हुई है।

दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं।

यह भी जानिए

संधि के तीन भेद होते हैं।

- **स्वर संधि :** दो स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।
  जैसे – विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, नदी + ईश = नदीश, महा + उत्सव = महोत्सव
- **व्यंजन संधि :** पहले शब्द के अन्त में यदि व्यंजन हो और दूसरे शब्द के आरम्भ में व्यंजन या स्वर हो तो दोनों के मेल से जो परिवर्तन या विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
  जैसे – सत् + आचार = सदाचार, जगत् + ईश = जगदीश, सत् + जन = सज्जन
- **विसर्ग संधि :** विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं।
  जैसे – मन:+भाव = मनोभाव, अध:+गति = अधोगति

8. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए —

धन + उपार्जन, सहायता + अर्थ, धर्म + आत्मा, सत् + मार्ग, तत् + लीन, नि: + पक्ष, नि: + तेज

अब करने की बारी

- पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त कर साहसी बालकों की कहानियाँ पढ़िए।
- आपके द्वारा देखी गई अथवा सुनी गई किसी साहसिक घटना का वर्णन कीजिए।
- साहसी व्यक्तियों के चित्र संकलित कर कक्षा में लगाइए।
- गणतंत्र दिवस के अवसर पर जिन साहसी बालकों को दिल्ली में सम्मानित किया जाता है, उनके साहसपूर्ण कार्यों को जानिए। ❑❑